भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-1 /अंक-10/ अप्रेल-2022

जय हनुमान

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष -1 / अंक -10 / अप्रेल -2022

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

For Private Circulation Only

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

अप्रेल माह

साका कैलेण्डर - 1944 विक्रम संवत - 2079 अयान - उत्तरायन ऋतु - वसंत

सोम		04 चैत्र शु. तृतीया, गणगौर गौरी-पूजन, मासिक कार्तिगाई	11 चैत्र शु. दशमी, नवरात्रा पारणा	18 बैशाख कृ. द्वितीया	25 बैशाख कृ. दशमी
मंगल		05 पौष शु. चतुर्थी, विनायक चतुर्थी व्रत	12 चैत्र शु. एकादशी, कामदा एकादशी व्रत	19 बैशाख कृ. तृतीया	26 बैशाख कृ. एकादशी, बरूधिनी एकादशी व्रत
बुध		06 चैत्र शु. पंचमी, लक्ष्मी पंचमी, रोहिणी व्रत	13 चैत्र शु. द्वादशी, वामन द्वादशी	20 बैशाख कृ. चतुर्थी	27 बैशाख कृ. द्वादशी
गुरु		07 चैत्र शु. षष्ठी, स्कंध षष्ठी, यमुना छट	14 चैत्र शु. त्रयोदशी,प्रदोष व्रत, सोलर नव वर्ष, बैसाखी	21 बैशाख कृ. पंचमी	28 बैशाख कृ. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत
शुक्र	01 चैत्र कृ. अमावस्या	08 चैत्र शु. सप्तमी	15 चैत्र शु. चतुर्दशी, नृसिंह जयंती, गुड फ्राइडे, विषु किनी	22 बैशाख कृ. षष्ठी, पृथ्वी दिवस	29 बैशाख कृ. चतुर्दशी, मासिक शिवरात्री
शनि	02 चैत्र शु. प्रतिपदा, नवरात्री प्रारंभ, गुडी पाडवा, झुलेलाल जयंती	09 चैत्र शु. अष्टमी,मासिक दुर्गाष्टमी	16 चैत्र शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, हनुमान जयंती	23 बैशाख कृ. सप्तमी, कालाष्टमी	30 बैशाख कृ. अमावस्या, दर्श अमावस्या
रवि	03 चैत्र शु. द्वितीया, मत्स्य जयंती	10 चैत्र शु. नवमी, रामनवमी, नवरात्र समाप्त, स्वामी नारायण जयंती	17 बैशाख कृ. प्रतिपदा, इष्टि	24 बैशाख कृ. नवमी	

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

भारत देश संस्कृति और त्यौहारों से सरोबार देश है, यहाँ हिंदू धर्म में शक्ति की उपासना के पर्व नवरात्रि का विशेष महत्व माना जाता है।

नवरात्रि शब्द का उदगम संस्कृत शब्द से हुआ है, जिसका अर्थ होता है **'नौ रातें'**। इन नौ रातों और दस दिनों के दौरान, शक्ति/देवी के नौ रूपों की आराधना की जाती है। नवरात्रि वर्ष में चार बार मनायी जाती है। पौष, चैत्र, आषाढ और अश्विन मास में प्रतिपदा से नवमी तक मनायी जाती है।

हिंदू धर्म में प्रचलित मान्यताओं के अनुसार चैत्र नवरात्रि के पहले दिन माँ दुर्गा का जन्म हुआ था और माता दुर्गा के कहने पर ही ब्रह्मा जी ने सृष्टि का निर्माण किया था। इसीलिए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही नवसंवत्सर यानि हिंदू नववर्ष का आरंभ होता है।

इसके अलावा कहा जाता है कि भगवान विष्णु के सातवें अवतार भगवान श्रीराम का जन्म भी चैत्र नवरात्रि में ही हुआ था। इसलिए धार्मिक दृष्टिकोण से भी चैत्र नवरात्र का महत्व बहुत अधिक है।

चैत्र नवरात्र या **"वासंतिक नवरात्रों"** के दौरान आदि शक्ति की पूजा के साथ-साथ अपने कुल देवी-देवताओं और नवग्रहों की पूजा का भी विधान है। नवरात्रि में माँ दुर्गा के नौ स्वरूपों की उपासना होती है। जिसे इस श्लोक द्वारा स्पष्ट किया है –

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति. चतुर्थकम्।।
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति.महागौरीति चाष्टमम्।।
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गा: प्रकीर्तिता:।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना:।।

नवरात्रि की शुरुआत घट स्थापना से की जाती है। इसके बाद माता के 9 स्वरूपों की पूजा होती है। अंतिम दिन को रामनवमी के रूप में मनाया जाता है।

माँ दुर्गा का प्रत्येक स्वरूप किसी न किसी ग्रह से संबधित है, जाने माँ के सभी स्वरूपो के बारे में –

- ❀ माँ शैलपुत्री - सूर्य ग्रह
- ❀ माँ ब्रह्मचारिणी - राहु ग्रह
- ❀ माँ चंद्रघंटा - केतु ग्रह
- ❀ माँ कुष्मांडा - चंद्रमा ग्रह
- ❀ माँ स्कंदमाता - मंगल ग्रह
- ❀ माँ कात्यानी - बुध ग्रह
- ❀ माँ कालरात्रि - शनि ग्रह
- ❀ माँ महागौरी - गुरू ग्रह
- ❀ माँ सिद्धिदात्री - शुक्र ग्रह

क्यों मनाते है रामनवमी?

चैत्र नवरात्रि मनाने के पीछे एक पुरानी कथा है, जिसके अनुसार जब भगवान श्री राम माता सीता को लंका से वापस लाने के लिए रावण से युद्ध करने जा रहे थे, तो उन्हें देवताओं ने माँ शक्ति की आराधना करने और उनसे विजय प्राप्त करने का आर्शीवाद लेने की सलाह दी। भगवान राम ने माता की पूजा के लिए 108 नीलकमल लिए और पूजा शुरू कर दी। जब रावण को यह ज्ञात हुवा कि श्री राम माँ आदि शक्ति की पूजा कर रहे हैं, तो उसने भी लंका में माँ की पूजा शुरू कर दी। रावण हारना नहीं चाहता था इसलिए उसने राम के 108 फूलों में से एक फूल चुरा लिया और अपने राज्य में माँ का पाठ करने लगा।

जब श्रीराम पूजा कर रहे थे तो एक फूल कम पड़ गया तो उस नीलकमल के स्थान पर वो अपनी एक आंख माता को समर्पित करने का सोचा, जैसे ही श्रीराम अपनी आंखें निकालने के लिए शस्त्र उठाया तो माता प्रकट हुईं और उन्होंने भगवान राम को जीत का आशीर्वाद दिया। जिसके परिणामस्वरूप राम-रावण युद्ध में रावण का अंत हो गया। इसलिए नवरात्रि के आखिरी दिन को रामनवमी के रूप में मनाया जाता है।

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें
सम्पर्क करें!

❖ व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

❖ ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

❖ ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

❖ **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

जीवन एक संसार

सही कर्म वो नहीं है,
जिसका परिणाम सही हो
बल्कि
सही कर्म वो है,
जिसका मकसद कभी
गलत ना हो।

जब विचार, प्रार्थना
और इरादा सकारात्मक
हो तो जीवन भी
स्वत: ही सकारात्मक
हो जाता है।

धैर्य
एक कडवा पौधा है,
पर इसके फल
हमेशा मीठा होता है।

रूह पर जब... 'मैं'
का दाग आ जाता है,
दिलों में तब...
'दिमाग'
आ जाता है !!

जीवन में हर तूफान
नुकसान करने ही नहीं
आता
कुछ तूफान रास्ता साफ
करने भी आते हैं।

जिंदगी में डाली
से गिरता हुआ 'पत्ता'
भी हमे सिखाता है कि
अगर बोझ बन जाओगे
तो अपने भी तुम्हे
गिरा देंगे।

झुलेलाल जयंती

चेटीचंड का त्यौहार क्यों मनाते है ?

चैत्र शुक्ल द्वितीया से सिंधी नववर्ष प्रारम्भ होता है। जिसे चेटीचंड के नाम से जाना जाता है। चैत्र मास को सिंधी में **"चेट"** कहा जाता है और चांद को **"चण्डु"**, इसलिए चेटीचंड का अर्थ **"चैत्र का चांद"** होता है। चेटीचंड का यह त्यौहार **"चेती चाँद"** और **"झूलेलाल जयंती"** के नाम से भी जाना जाता है। सिंधी समुदाय का यह त्यौहार भगवान झूलेलाल के जन्मोत्सव के रूप में भारत, पाकिस्तान और सिंध प्रदेश में हर्षोल्लास से मनाया जाता है।

भगवान झूलेलाल का जन्म सदभावना और भाईचारा बढ़ाने के लिए हुआ था। इनके उपासक भगवान झूलेलाल को उदेरोलाल, घोड़ेवारो, जिन्दपीर, लालसाँई, पल्लेवारो, ज्योतिनवारो, अमरलाल आदि नामों से भी पूजते हैं। इनको जल और ज्योति का अवतार माना गया है, इसलिए लकड़ी का मंदिर बनाकर उसमें एक लोटे से जल और ज्योति प्रज्वलित की जाती है और इस मंदिर को श्रद्धालु चेटीचंड के दिन अपने सिर पर उठाते हैं, जिसे **"बहिराणा साहब"** भी कहा जाता है। सिंधी समाज के लोग शोभा यात्रा का आयोजन करते है जिसमें 'छेज' (जो कि गुजरात के डांडिया के समान ही एक लोकनृत्य होता है) के साथ झूलेलाल की महिमा के गीत गाते हैं। ताहिरी (मीठे चावल), छोले (उबले नमकीन चने) और शरबत का प्रसाद बांटा जाता है। शाम को बहिराणा साहिब का विसर्जन किया जाता है।

कौन है भगवान झूलेलाल ?

संवत् 1007 में पाकिस्तान में सिंध प्रदेश के ठट्टा नगर में मिरखशाह नाम का एक मुगल राजा राज्य करता था। उसने अत्याचार करके हिंदू धर्म के लोगों को जबरन इस्लाम स्वीकार करवाया। उसके जुल्मों से परेशान हो कर एक दिन सभी पुरुष एवं महिलाये बच्चो और बुजुर्गो के साथ सिंधु नदी के पास एकत्रित हुए और भगवान का स्मरण करने लगे। उन सभी के कठोर तप परिणामस्वरूप सिंधु नदी में से एक बहुत बड़े नर मत्स्य पर बैठे हुए भगवान झूलेलाल प्रकट हुए पल भर के बाद ही वह आकृति सभी भक्तजनों की आंखों से ओझल हो गई। तभी आकाशवाणी हुई कि हिंदू धर्म की रक्षा के लिए मैं कुछ दिनों के बाद श्रीरतनराय के घर में माता देवकी की कोख से जन्म लूंगा। निश्चित समय पर चैत्र माह की

द्वितीया को रतनरायजी के घर एक सुंदर बालक का जन्म हुआ, जिसका नाम **उदयचंद** रखा गया।

मिरखशाह को जब उस बालक के जन्म की खबर पहुंची, तो वह अत्यंत विचलित हो गया और उसने इस बालक को मारने की योजना बनाई परंतु वह सफल नहीं हो पाया। तेजस्वी मुस्कान वाले बालक को देखकर उसके मंत्री दंग रह गए। तभी अचानक वह बालक वीर योद्धा के रूप में नीले घोड़े पर सवार होकर सामने खड़ा हो गया और अगले ही पल वह बालक विशाल मछली पर सवार दिखाई दिया। सभी मंत्रीयो ने घबराकर उनसे माफी मांगी। बालक ने उस समय मंत्रीयो को कहा कि वह अपने हाकिम को समझाए कि अपनी प्रजा पर अत्याचार न करे, लेकिन फिर भी मिरखशाह नहीं माना। तब भगवान झूलेलाल ने एक वीर सेना का संगठन किया और मिरखशाह को हरा दिया। तब मिरखशाह भगवान झूलेलाल की शरण में आ गया इसके कारण उसके प्राण बच गये।

अपने चमत्कारों के कारण बाद में उन्हें **"झूलेलाल और लालसांई"** के नाम से सिंधी समाज और **"ख्वाजा खिज्र जिन्दह पीर"** के नाम से मुसलमान पूजने लगे।

भगवान झूलेलाल संवत् 1020 भाद्रपद की शुक्ल चतुर्दशी के दिन अन्तर्धान हो गए।

सिंधी नववर्ष
की शुभकामना

MAHA RERA NO : P51800027240
www.whiteberryresidency.com
WHITE BERRY
RESIDENCY
EVERY DAY
IS A GOOD DAY
TO FIND YOUR
DREAM HOME
Google Location
QR Code:
98705 80810
85913 69996
Next to Jain Derasar, Asha Nagar, Thakur Complex, Kandivali (E), Mumbai.

Kings weds Queens
Wedding Celebrations
Create your
wedding story more
magical with
wedding logo design
wedding invitation card
wedding website
wedding stationery
wedding theme
festival greetings
and many more creatives.
www.kingswedsqueens.com

अगर आप अपने

'शब्दों के मोती'

भारतीय परम्परा
की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे

सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट
पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

भारतवर्ष रूढी-परंपरा, रीति रिवाज इन सबके अलावा उत्साह और उत्सवों का देश हैं। अलग-अलग प्रांतों में मनाए जाने वाले विविध तीज त्योहारों का देश हैं। ऐसा ही एक महाराष्ट्रीयन त्यौहार **'गुढीपाडवा' गुढी याने लकड़ी का बांबू और प्रतिपदा तिथि याने पाडवा है।**

महाराष्ट्र के राजा शालीवाहन ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा इस दिन से काल गणना शुरू की थी, यह पर्व गुढीपाड़वा के नाम से मनाया जाता है। इसके अलावा यह त्यौहार कर्नाटक और आंध्रप्रदेश इन राज्यों में भी **'संवत्सर पडवो'** या **'उगादी'** के नाम से मनाया जाता है। गौतमीपुत्र की सत्ता से आजाद होने की खुशी में वह लोग **'विजय दिन'** के नाम से इस दिन को मनाते हैं।

गुढी पाड़वा का महत्व –

'गुढीपाडवा' चैत्र शुद्ध प्रतिपदा इस तिथि को मनाया जाने वाला त्यौहार है इस दिन सूर्योदय से पहले उठकर अभ्यंग स्नान किया जाता है। फिर घर की सफाई करके रंगोली बनाई जाती है। सामने दरवाजे पर फूल और आम के पत्ते का तोरण और विजय पताका बांधी जाती हैं। ऊंचे बांबू को पानी से साफ करके उसकी पूजा करके गुढी तैयार की जाती है। गुढी में ऊपर रेशमी कपड़ा या साड़ी पहनाई जाती है। कडूनीम की डाली, आम के पत्ते, फूलों का हार और शक्कर की गाठी की माला उसमें लगाई जाती है। उसके ऊपर तांबे का कलश स्वस्तिक बनाकर उल्टा रखा जाता है। फिर गुढी की विधिवत पूजा करके घर के सामने दाईं तरफ गुढी लगाई जाती है वह थोड़ी झुकी हुई होती है। तब उसको कडुनीम के पत्ते और गुड़ का या शक्कर का भोग लगाया जाता है।

इस दिन श्रीखंड-पूरी या पूरनपोली का भोजन बनाकर भोग लगाया जाता है। शाम को सूर्यास्त के समय हल्दी-कुमकुम फुल आदि चढ़ा कर गुढ़ी उतार दी जाती है। गुड-कडुनीम का प्रसाद सभी को दिया जाता है। इस तरह से 1 दिन का यह गुढ़ीपाड़वा का पर्व घर परिवार के सभी लोग मिलकर बड़े ही उत्साह एवं धूमधाम से मनाते हैं।

गुढीपाडवा की पूजा में उपयोग में आने वाले वस्तुओं का अर्थ –

- कहते हैं कि अभ्यंग स्नान करने से इंसान के रजो और तमोगुण एक लाख से कम हो जाते हैं और उतने ही सद्गुण बढ़ जाते हैं।
- लकड़ी का पाटा (जिसे आसन भी कहते हैं) स्थिरता का प्रतीक है।
- पूजा में रखी जाने वाली सुपारी - संकल्प याने दृढ़ निश्चय का प्रतीक है, वहीं नारियल या श्रीफल सकारात्मक लक्ष्य नियोजन का प्रतीक है।
- हल्दी कुमकुम - सुहागन या पति की लंबी उम्र की कामना के लिए रखा जाता है।
- गुढी या बाबू - यहां सामर्थ्य या मजबूती और प्रकृति के संरक्षण का प्रतीक है।
- रेशमी कपड़ा या साड़ी घर में सुख-समृद्धि का प्रतीक है।
- शक्कर गाठी जिंदगी में मिठास का, फुल हार - मंगल का, तो कडुनीम
- आरोग्य का और कलश - सफलता, मंगल और समृद्धि का प्रतीक है।

इस त्यौहार में कलश को उल्टा रखा गया है ताकि वह गुढी पर की सारी चीजों को बांध के रखे और जो कि कलश हमेशा ही भरा होता है पर गुढी ऊपर की तरफ होने की वजह से भी कलश को उस पर उल्टा रखते हैं। गुढ़ी को थोड़ा तिरछा रखना याने भगवान की तरफ समर्पण का भाव होता है।

27 नक्षत्रों से 27 तरंगे बनती है, इनमें से प्रजापति, यम एवं सूर्य यह तीनों ही तरंगे बहुत ही महत्वपूर्ण है। गुढीपाडवा याने चैत्र शुद्धि प्रतिपदा के दिन इन तीनों तरंगों का समतोल मिश्रण होकर वह ज्यादा से ज्यादा मात्रा में पृथ्वी की तरफ आती है। तांबे के कलश में उन तरंगों को ग्रहण करने की क्षमता बहुत ज्यादा होती है, उसकी सहायता से यह तरंगे जो **"नवनिर्मिति"** का प्रतीक है वह घर में प्रवेश करती है और घर को नई ऊर्जा एवं सकारात्मकता से भर देती है।

गुढीपाडवा के दूसरे दिन से उसी कलश में पानी रखकर पीने से उसका प्रभाव ज्यादा और अच्छा होता है। शक्कर की गाठी से शरीर को ठंडक मिलती है और कडुनीम के सेवन से कफ, उष्णता एवं पित्त इत्यादि रोगों का नाश होकर मनुष्य को आरोग्य प्रदान होता है।

माना जाता है कि ब्रह्मा जी ने इसी दिन सृष्टि की रचना की थी और इसीलिए ब्रह्मा जी की पूजा भी इस दिन होती है। वेद - ग्रंथों के अनुसार गुड़ी पाडवा यह साढ़े तीन मुहूर्त में से एक है। इसी दिन से मराठी नववर्ष की शुरुआत होती है। कोई भी बड़े काम की शुरुआत इस दिन से कर सकते हैं जैसे नई चीज खरीदना, नया व्यवसाय शुरू करना, सोना आदि खरीदना इत्यादि।

यह भी कहा जाता है कि श्री राम जी जब 14 साल का वनवास पूरा करके अयोध्या लौटे थे तो इसी दिन उनका राज्याभिषेक हुआ था। रामनवमी (राम जन्मोत्सव) की तैयारी भी इसी दिन से शुरू हो जाती हैं। चैत्र शुक्ला प्रतिपदा याने बसंत ऋतु का पहला दिन! **"सभी ऋतुओं में मैं बसंत में ही हूं"** ऐसा भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा था। मानव ही नहीं पशु पक्षी यहां तक की जड़ चेतन प्रकृति भी आलस्य को छोड़कर सचेतन हो जाते हैं।

बसंत ऋतु में प्रकृति में नई बहार होती है और गुढीपाडवा के माध्यम से यही नयापन हमारे जिंदगी में भी आ जाता है।

‘मणिपूरी नव-वर्ष’
साजिबू नोंग्मा पैनाबा उत्सव
कैसे मनाया जाता है?

आइकन को स्पर्श करें

‘तेलुगु व कन्नड नव-वर्ष’
उगादी उत्सव
कैसे मनाया जाता है?

आइकन को स्पर्श करें

हंसी-खुशी के पल

नारद मुनि जैसी हो गयी है जिंदगी जैसे वो घूमते रहते थे तीनों लोकों में वैसे ही हम घूमते रहते है.. एक ग्रुप से दूसरे ग्रुप मे।

नारायण-नारायण

गर्मी का मौसम शुरू हो गया है.. पानी ज्यादा पीना खाना कम खाना और घर से बहार जाओ तो सिर पर ढक कर जाना.. क्योंकि भूसे में आग जल्दी लगती है।

अजीब चेहरे बनाना, अकेले मुस्कुराना, बेवजह हंसना पहले ये सब पागलपन की निशानियां होती थी.. अब इसे सेल्फी लेना कहते है।

पहले हम हिन्दुस्तानी बहुत सुन्दर थे...
फिर एक दिन हमारा आधार कार्ड बन गया !

में बातें बना लेती हूं, मुंह बना लेती हूं, दिमाग का दही बनी लेती हूं, दही का रायता बना लेती हूं.. फिर भी लोग कहते है कि मुझे कुछ आता नहीं ...!

चुनाव आता है..
कोरोना जाता है,
पेपर आता है..
कोरोना आता है,
बताओ ये रिश्ता क्या कहलाता है..!

पारम्परिक व्यंजन - पूरन पोली

सामग्री -

1 कप चना दाल (तुअर दाल भी ले सकते है), 1 कप गुड़ (शक़्कर भी ले सकते है), 1चुटकी इलायची पाउडर, 1 चुटकी जायफल पाउडर, 1/2 कप मैदा, 1/2 कप गेहूं का आटा, 2 बड़े चम्मच तेल, 1/4 कप घी, स्वादानुसार नमक, आवश्यकतानुसार पानी

पूनम राठी जी

विधि -

- दाल को 4-5 घन्टे पहले पानी में भिगो दे।

- आटे और मैदा को किसी बर्तन में छान लीजिये, 2 टेबल स्पून घी और स्वादानुसार नमक डाल कर अच्छी तरह मिला ले। आटे को गुनगुने पानी की सहायता से नरम गुंथे। इसको 20 मिनिट के लिये रख दे।

- दाल को कुकर में 3 कप पानी डाल कर उबालने रख दीजिये, एक सीटी आने के बाद गैस बन्द कर दे। कुकर से दाल निकाले, ठंडा करे और बिना पानी डाले मिक्सी से बारीक पीस ले।

- कढ़ाई में एक टेबल स्पून घी डाल कर गरम करे, घी में पिसी हुई दाल, पिसी हुई चीनी डाले (यदि आप मीठे के लिये गुड़ का प्रयोग कर रहे हैं तो गरम घी में गुड़ को तोड़ कर डालें और पिघला लें अब पिसी हुई दाल डाल कर) 5 मिनिट भूनिये, फिर ठंडा करे और उसमें इलाइची पीसकर मिला दे। पूरी में भरने के लिये पूरन तैयार है।

- गैस पर तवा रख कर गरम करे, गूथे हुये आटे से गोल लोई बनाये, सूखा आटा लगाकर बेल ले। 2 चम्मच पूरन इस बेली हुई पूरी के उपर रख कर रखिये और पूरी को चारों ओर से उठाकर, बन्द करके, दोनों हाथों की हथेली के बीच रख कर दबाये और हाथ से बड़ा करें। (ऎसा नहीं करेगे तो आपकी पूरन पोली बेलते समय फट सकती है)। अब इस पूरन भरे हुये गोल को सूखा आटा लगाकर पूरन पोली बेल ले। बेले हुई पूरन पोली को तवे पर डाल कर दोनों तरफ घी लगा कर पलट पलट कर भूरा होने तक सेंके।

- पूरन पोली तैयार है इसको आलू करी, अचार, चटनी या मनपसंद सब्जी के साथ खाये।

गणगौर का व्रत

गणगौर राजस्थान एवं सीमावर्ती राज्यों का एक मुख्य त्यौहार है जो चैत्र महीने की शुक्ल पक्ष की तीज को आता है। इस दिन कुवांरी कन्याएं एवं विवाहित महिलाएं शिवजी (इसर जी) और पार्वती जी (गौरी) की पूजा करती हैं।

गणगौर का सिंजारा -

सिंजारा बहु और बेटी के प्रति प्रेम को दर्शाता है। राजस्थान में किसी भी त्यौहार के एक दिन पहले सिंजारा मनाये जाने की परम्परा है, जैसे तीज का सिंजारा, करवा चौथ सिंजारा, उबछट का सिंजारा, गणगौर का सिंजारा आदि इसमें महिलाएं केश धोकर मेहंदी लगाती है और श्रृंगार करती है। मेहंदी लगाना भी 16 श्रृंगार का एक भाग होता है।

गणगौर के एक दिन पूर्व चैत्र शुक्ल दूज को सिंजारा होता है, जिसमे बेटी को ससुराल में साडी, घेवर और रूपये भेजे जाते है। शादी के बाद की पहली गणगौर बहु पीहर में मनाती है तो उसको ससुराल से सिंजारा आता है, जिसमे साड़ी, श्रृंगार की सामग्री, आभूषण, चूड़ी, मेहँदी, मिठाई और घेवर आते है। सिंजारा माता-पिता और सास ससुर के प्यार को दर्शाता है।

गणगौर पूजा की 16 दिन की विधि -

चैत्र माह की शुक्ल पक्ष की तृतीया को गणगौर का व्रत किया जाता है। यह व्रत महिलाये अपने पति की लम्बी आयु के लिए और कुंवारी कन्याएँ मनचाहे पति की प्राप्ति के लिए रखती है। गणगौर की पूजा 16 दिन तक होती है जो होली पर्व के दूसरे दिन से शुरू होकर गणगौर के दिन पूरी

होती है। शुरू के 8 दिन होली और गोबर की पिंडियो से और बाद के 8 दिन ईसर गौर से पूजा होती है।

होली के दूसरे दिन सुबह 8 पिण्डिया राख की और 8 पिण्डिया गोबर की बनाकर छोटी टोकरी में दूब बिछाकर रख देते है। कन्याएँ तड़के एक लोटे में जल, दूब, पुष्प लेके दूब लाने के गीत गाते हुए आती है। फिर धरती पर गोबर या पिली मिट्टी का चौका देकर पिण्डियों की टोकरी उस पर रखे। अब दीवार पर कुंकुम, काजल और मेहंदी की सोलह सोलह बिंदिया लगाएं और पिण्डियों पर पुष्प चढ़ाये। इसके बाद एक थाली में थोड़ा सा जल, एक कौड़ी, सुपारी, एक चाँदी का छल्ला और पैसा डालकर दूध के छींटे दे। थाली को टोकरी पर और फिर अपने सिर पर लगाये। शीतला सप्तमी तक (8 दिनों तक) इसी प्रकार से पूजा करे।

शीतला सप्तमी या बसेड़ा के दिन गणगौर कुम्हार से लाये या स्वयं भी मिट्टी से बना सकते है। एक कुंडे या टोकरी में ईसर जी और गणगौर को रखें और उन्हें वस्त्राभूषण पहनाये। तब "मिट्टी लाने" का गीत गाये। उसके बाद दिन में बाहर से जल लाकर "जल पिलाने" का गीत गाते हुवे ईसर और गणगौर को जल पिलाये और जिमावे। गणगौर को दूध का दाँतन कराये, जल चढ़ाये, टीका - काजल लगाये और पुष्प हार चढ़ाये। फिर "ज्वारा" के गीत गाते हुए दूब चढ़ाये। उसके बाद आरती करे और गणगौर की कथा कहें।

इस बीच आने वाले रविवार को **"सूरज रोटा"** का व्रत भी करें। जिन महिलाओं को गणगौर का उद्यापन करना है उनको सूरज जी व्रत करना जरुरी होता है।

गणगौर के दिन पूजा की विधि –

गणगौर पूजन (तीज) के दिन धरती पर गोबर या मिट्टी का चौका देकर उस पर दूब और ज्वारा बिछाये। फिर ईसर और गणगौर को टोकरी में से निकालकर उस पर विराजमान करे। जल, रोली, मोली, चावल, काजल, मेहँदी, चूड़ी और पुष्प आदि से पूजा करे। कुंकुम, मेहँदी और काजल से 16 बिंदिया लगाए।

गणगौर के आभूषण के लिए गेहूँ के आटे में हल्दी मिलाकर गूथे और उस आटे से आभूषण बनाये जैसे- हार, चूड़ी, अंगूठी, रखड़ी, पायल, करधनी आदि, उन्हें कुंकुम-चावल से सज्जित करे और गणगौर माता को अर्पित करे। घी या तेल का दिया जलाये व हलवे, मिठाई और गणगौर के बनाये फल अर्पित करे। 8 फल अर्पित करे, उसमे से 4 पूजा के बाद अपनी थाली में वापस रख लेवे और खाना खाने से पहले उन फलो को खाये।

विवाहित महिलाये अपना जोड़ा बना कर हाथ में दूब लेकर पानी के कलश से छींटे देते हुए **"गौर गौर गोमती..."** गीत से 8 बार पूजा करती है और अविवाहित कन्या अपना जोड़ा बनाकर 16 बार पूजा करती है। उसके बाद आरती करे और कथा कहे या सुने। गणगौर की कहानी, गणेश जी की कहानी और लपसी तपसी की कहानी कहते है। अंत में बधावे और पाटे के गीत गाकर, उसे प्रणाम कर भगवान सूर्यनारायण को जल चड़ा कर अर्क देते है। पूजा के बाद कलपणा (बायना) निकाले और सासु माँ या नन्द को देवे जिसमे मिठाई और दक्षिणा रखे। कलपणा निकाल कर भोजन कर सकते है।

संध्या से पहले गणगौर को जल पिलाकर विदा करें। विदाई के गीत गाते हुए मिठाई और श्रृंगार सामान के साथ, ईसर जी और गणगौर को गंगा नदी या तालाब में विसर्जित करे। आज के दिन कन्याये और महिलाये गणगौर माँ को अपनी बड़ी बहन मानती है, जो 16 दिन तक पीहर में रहती है और विसर्जन करना उनको ससुराल भेजना माना जाता है। इसलिए विसर्जन से पहले विदाई के गीत गाते है। गणगौर माता सुहाग दात्री होती है जो पूजा के बाद महिलाओं को अमर सुहाग का आशीर्वाद देती है और कुंवारी कन्याओं को मन चाहे वर का आशीर्वाद देती है।

गणगौर व्रत की कथा सुनें आइकन को स्पर्श करें

गणगौर पूजा का गीत

गौर गौर गोमती ईसर पूजे पार्वती
पार्वती का आला-गीला, गौर का सोना का टीका
टीका दे, टमका दे, बाला रानी बरत करयो
करता करता आस आयो वास आयो
खेरे खांडे लाड़ू आयो, लाड़ू ले बीरा ने दियो
बीरो ले मने पाल दी, पाल को मै बरत करयो
सन मन सोला, सात कचौला, ईशर गौरा दोन्यू जोड़ा
जोड़ ज्वारा, गेंहू ग्यारा, राण्या पूजे राज ने, म्हे पूजा सुहाग ने
राण्या को राज बढ़तो जाए, म्हाको सुहाग बढ़तो जाय
कीड़ी-कीड़ी, कीड़ी ले, कीड़ी थारी जात है, जात है गुजरात है
गुजरात्यां को पाणी, दे दे थाम्बा ताणी
ताणी में सिंघोड़ा, बाड़ी में भिजोड़ा
म्हारो भाई एम्ल्यो खेमल्यो, सेमल्यो सिंघाड़ा ल्यो
लाड़ू ल्यो, पेड़ा ल्यो सेव ल्यो,
झर झरती जलेबी ल्यो, हरी-हरी दूब ल्यो, गणगौर पूज ल्यो
इस तरह सोलह बार बोल कर आखिरी में
बोले एक-लो, दो-लो, तीन लो ... सोलह-लो।

पाटा धोने का गीत

पाटो धोय पाटो धोय, बीरा की बहन पाटो धो,
पाटो ऊपर पीलो पान, म्हे जास्या बीरा की जान।
जान जास्या, पान जास्या, बीरा ने परणाय लास्या,
अली गली मे साप जाये, भाभी थारो बाप जाये।।
अली गली गाय जाये, भाभी थारी माय जाये,
दूध मे डोरों, म्हारों भाई गोरो,
खाट पे खाजा, म्हारों भाई राजा,
थाली मे जीरा म्हारों भाई हीरा।
थाली मे है पताशा, बीरा करे तमाशा।
ओखली मे धानी, छोरया की सासु कानी,
छाजला में तिल्ली, छोरया की सासु बिल्ली।।

लघुकथा - दुआ

चिलचिलाती धूप में जैसे ही सिंग्नल की लाल बत्ती जली मन ही मन मैं बड़बड़ाई कभी गोद में लेटी परी को देखती तो कभी सिंग्नल को। कल रात से परी का बुखार कम हो ही नहीं रहा था उस चंचल परी की चुप्पी देख माँ का हृदय व्यथित हो उठा। डॉक्टर ने कुछ दवाईयां बदल कर दी और कहाँ कुछ खिलाने के बाद यह दवाईयां देनी होगी, इनसे भी आराम ना मिले तो कल एडमिट करना होगा। घर पहुँच कर दवा देने की जल्दी थी।

तभी एक महिला कार के शीशे के समीप आ खडी हुई अपनी पीठ पर छोटे से बच्चे को मटमैलै सारी के ऑचल से बांध रखा था, सुखा हुआ शरीर, मुरझाया सा वह बच्चा और सूरज का प्रकाश मानो परवान चढ़ने बेताब हो रहा था। उस चिलचिलाती धूप में महिला के हाथ में गुब्बारें थे पसीने में नहाया शरीर पैरों में चप्पल नहीं। कितनी ही कारों के शीशों से उसे झिड़कियां मिल रही थी जिन्हें निगलने की शक्ति तो उसे परमात्मा ने दे रखी थी पर, पापी पेट के आगे वह मजबूर थी।

वह बार बार गुब्बारे लेने की विनती कर रही थी। आज लंबे अंतराल बाद कोरोना का भय कम हुआ था जिससे उसकी ऑखों में चमक थी उसके मन में आस थी आज वह अपने बच्चों को कुछ खिला सके।

शायद आज घर का चुल्हा जले मैंने सारे गुब्बारों की कीमत पूछी जो डॉक्टर की फीस से काफी कम थी, गुब्बारे ले उसे रुपए दे दिए और साथ में बिस्किट का पैकेट और पानी की बोतल दी, इसके अलावा कुछ अतिरिक्त रुपए भी दिए तथा उसे कहा इससे तुम चप्पल खरीद लेना वह हाथ जोड़कर शुक्रिया अदा करने लगी। उसके ऑखों की चमक देखकर मन को संतुष्टि मिली।

घर पहुँच कर परी को भोजन करवाया कल रात से उसने कुछ नहीं खाया था आज भोजन कर खेलने लगी थी। दवा तो अभी उसके पेट में गई ही नहीं थी उसका बुखार भी उतर गया **मैं असंमजस में घिरी सोच रही थी शायद दवा से अधिक दुआ असर कर गई।**

- राजश्री राठी जी

MXCREATIVITY
Brand Creation & Digital Marketing
CALL US AT
+91 8080518745
Digital
Marketing
Search Engine
Social Media
Public Relations
Affiliates
Google Ads
Google Analytics
Email Marketing
Video Content
Whatsapp Marketing
www.mxcreativity.com

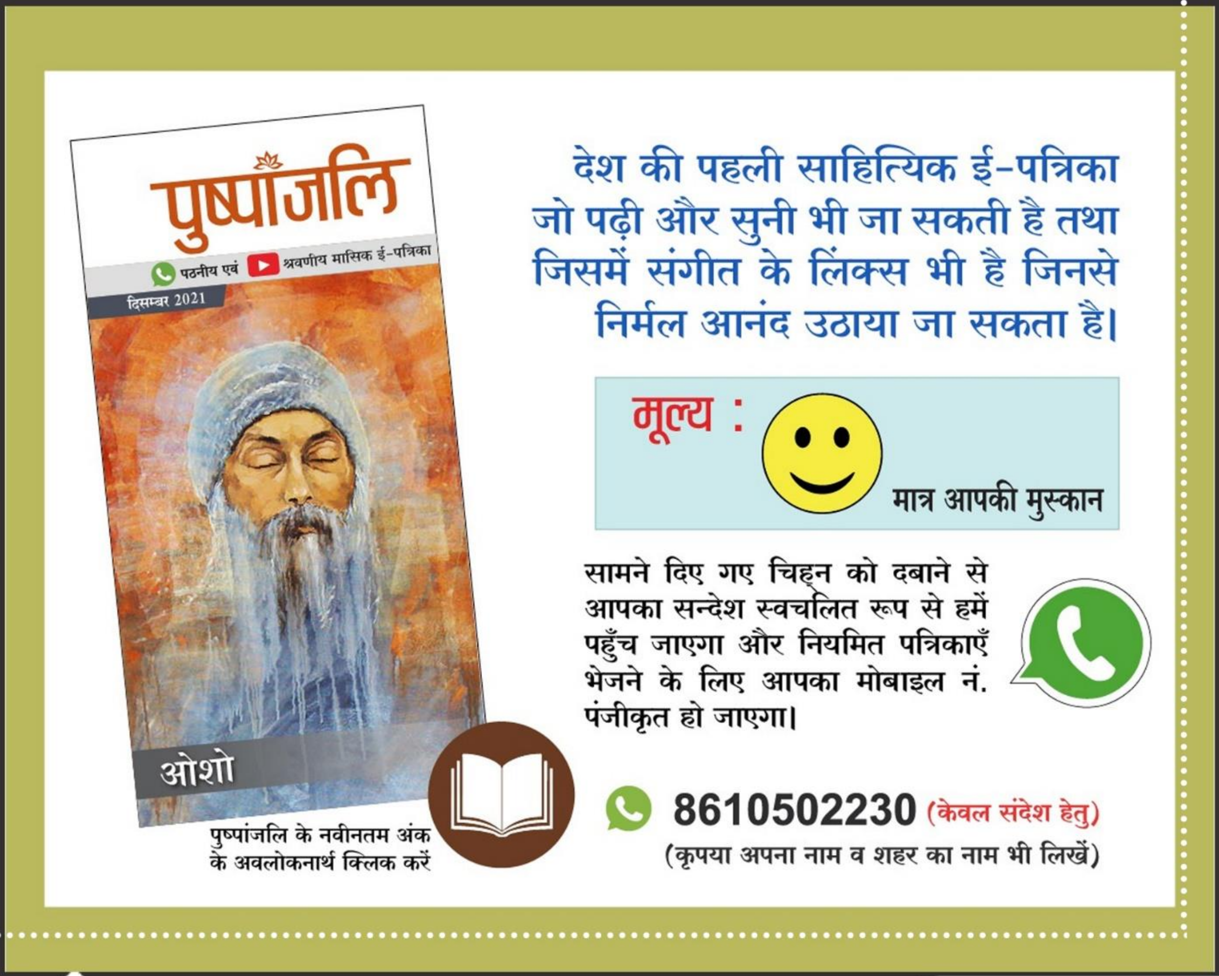
पुष्पांजलि
पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका
दिसम्बर 2021
ओशो
पुष्पांजलि के नवीनतम अंक के अवलोकनार्थ क्लिक करें
देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।
मूल्य :
मात्र आपकी मुस्कान
सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।
8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

सत्संग बडा या तप...?

हमें छोटेपन से ही हमारे माईतों ने समझाया है कि हमें अपनी दिनचर्या में से कुछ समय सत्संग के लिये निकालना ही चाहिए यानि हमें नियमित रूप से सत्संग में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी ही है। कभी भी या जब भी, आस-पास कहीं सत्संग हो वहाँ आपको बुलाया नहीं भी हो तो भी शामिल होने में संकोच नहीं करना चाहिये। इसके अलावा सत्संग केवल सुनना ही नहीं है बल्कि उस पर अमल करने का प्रयास अवश्य करना चाहिये। ऐसा वो क्यों समझते थे इसके लिए एक रोचक ऐतिहासिक वाकया है जो इस प्रकार है -

एक बार विश्वामित्र जी और वशिष्ठ जी में इस बात पर बहस हो गई, कि सत्संग बड़ा है या तप ???

विश्वामित्र जी ने कठोर तपस्या करके ऋद्धि-सिद्धियों को प्राप्त किया था, इसलिए वे तप को बड़ा बता रहे थे।

जबकि वशिष्ठ जी सत्संग को बड़ा बताते थे।

वे इस बात का फैसला करवाने ब्रह्मा जी के पास चले गए।

उनकी बात सुनकर ब्रह्मा जी ने कहा- मैं सृष्टि की रचना करने में व्यस्त हूँ। आप विष्णु जी के पास जाये। विष्णु जी आपका फैसला अवश्य कर देगें।

अब दोनों विष्णु जी के पास चले गए।
विष्णु जी ने सोचा- यदि मैं सत्संग को बड़ा बताता हूँ तो विश्वामित्र जी नाराज होंगे और यदि तप को बड़ा बताता हूँ तो वशिष्ठ जी के साथ अन्याय होगा। इसलिए उन्होंने भी यह कहकर उन्हें टाल दिया, कि मैं सृष्टि का पालन करने मैं व्यस्त हूँ। आप शंकर जी के पास चले जाइये।

अब दोनों शंकर जी के पास पहुंचे।
शंकर जी ने उनसे कहा- ये मेरे वश की बात नहीं है। इसका फैसला तो शेषनाग जी कर सकते हैं।

अब दोनों शेषनाग जी के पास गए।
शेषनाग जी ने उनसे पूछा- कहो ऋषियों ! कैसे आना हुआ।

वशिष्ठ जी ने बताया- हमारा फैसला कीजिए, कि तप बड़ा है या सत्संग बड़ा है? विश्वामित्र जी कहते हैं कि तप बड़ा है, और मैं सत्संग को बड़ा बताता हूँ।

शेषनाग जी ने कहा- मैं अपने सिर पर पृथ्वी का भार उठाए हूँ, यदि आप में से कोई भी थोड़ी देर के लिए पृथ्वी के भार को उठा ले, तो मैं आपका फैसला कर दूंगा।

तप में अहंकार होता है, और विश्वामित्र जी तपस्वी थे।

उन्होंने तुरन्त अहंकार में भरकर शेषनाग जी से कहा- पृथ्वी को आप मुझे दीजिए। विश्वामित्र ने पृथ्वी अपने सिर पर ले ली। अब पृथ्वी नीचे की और चलने लगी। शेषनाग जी बोले-विश्वामित्र जी! रोको। पृथ्वी रसातल को जा रही है। विश्वामित्र जी ने कहा- मैं अपना सारा तप देता हूँ, पृथ्वी रूक जा। परन्तु पृथ्वी नहीं रूकी। ये देखकर वशिष्ठ जी ने कहा- मैं आधी घड़ी का सत्संग देता हूँ, पृथ्वी माता रुक जा। पृथ्वी माता वहीं रूक गई।

अब शेषनाग जी ने पृथ्वी को अपने सिर पर ले लिया, और उनको कहने लगे- अब आप जाइये।
विश्वामित्र जी कहने लगे- लेकिन हमारी बात का फैसला तो हुआ नहीं है।

शेषनाग जी बोले- विश्वामित्र जी! फैसला तो हो चुका है। आपके पूरे जीवन का तप देने से भी पृथ्वी नहीं रुकी, और वशिष्ठ जी के आधी घड़ी के सत्संग से ही पृथ्वी अपनी जगह पर रूक गई। फैसला तो हो गया है कि तप से सत्संग ही बड़ा होता है।

उपरोक्त तथ्य को ही किसी संत ने संक्षेप में इस तरह बयाँ किया है -

"सत्संग की आधी घड़ी, तप के वर्ष हजार।
तो भी नहीं बराबरी, संतन कियो विचार ।।"

- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी

हमारे लोक पर्व

आज परंपरा खो ही गई और खो गए लोकपर्व हमारे
जिनसे हम मुस्कुराते और उत्सुक रहते हमारे चेहरे।
घर में मेहमानों का इंतजार रहता, रहती खुशियां इन दौर पे,
पहले छोर से शुरू होकर और रहती अंतिम छोर पे।
मां बताती रीत सदा पिताजी बताते नया हुनर अंदाज
ऐसे करते करते हम खिलते, बातो में ही थी नई मिशाल।
साफ सफाई चौका बर्तन साथ में बनाते नए पकवान,
घर घर जाया करते थे आखिर लोक पर्व ही हैं हमारी पहचान।
अब तो ना लोग दिखते ना ही हमारे लोकपर्व रिवाज
सारी परंपराएं खो दी हमने क्योंकि हम है पश्चिमी संस्कृति के मोहताज।
अब तो याद करती सुहानी पुरानी संस्कृति पुराने रिवाज
क्या लेकर आ भी पाएगी कभी उन लोक पर्वों की पुरानी मिसाल।

- सुहानी जोशी जी

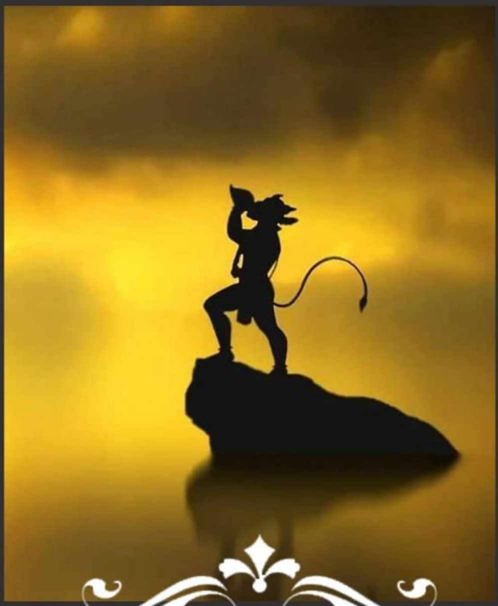

कृपा करहु गुरुदेव की नाईं

भारतीय संस्कृति में गुरु का महत्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य का गुरु से संबंध को सांसारिक संबंध से भी बढ़कर बताया गया है। कबीर दास जी ने तो यहां तक माना है कि -

गुरु मिला तो सब मिला, नहीं तो मिला न कोय।
मात पिता सूत बान्धवा ये तो घर घर होय।।

"गुरु" का न होना लघु होना है। जीवन में गुरु के महत्व को इसी बात से समझा जा सकता है। अर्थात **"जो अपने कर्म, ज्ञान एवं व्यवहार से हमारी लघुता मिटा दे वही गुरु है।"** इस परिभाषा की दृष्टि से हनुमान जी एक महान गुरु हैं।

हमारे जीवन से लघुता को मिटाने के लिये गुरु हमें तीन चीज देते हैं। वह तीन चीज है दीक्षा, मंत्र एवं शिक्षा। एक गुरु के रूप में हनुमान जी द्वारा दिए जाने वाली दीक्षा, मंत्र एवं शिक्षा पर विचार करते हैं।

हनुमान जी की दीक्षा :

कुमति का वरण एवं सुमति से दूरी ही जीवन में आनंद के अभाव का कारण है। यदि हम अपने आचरण में कुमति का निवारण करके सुमति का वरण कर पाए तो जीवन आनंदमय हो जायेगा। हनुमानजी स्वयं इस दीक्षा को आत्मसात किये हुए हैं एवं गुरु के रूप में हमें भी यही दीक्षा देते हैं। श्री हनुमान चालीसा में उन्हें इसलिए कहा गया है;

महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवारि सुमति के संगी।

हनुमानजी का मंत्र :

हनुमानजी दीक्षा में सबको एक अति प्रभावी गुरु मंत्र देते हैं। वह मंत्र है श्री राम नाम। हनुमानजी का मंत्र कोई औपचारिक मंत्र नहीं है। वह हनुमान जी द्वारा स्वयं सिद्ध किया हुआ मंत्र है। हनुमान जी का अपने मंत्र के प्रभाव पर पूर्ण विश्वास है। हनुमानजी की एक और विशेषता है कि वे सबको जो मंत्र देते हैं, उसे स्वयं भी निरन्तर जाप करते हैं। और यदि वह मंत्र किसी और द्वारा जाप किया जा रहा हो तो वे रसिया की तरह सुनने लगते हैं।

"राम नाम सुनबे को रसिया"।

हनुमानजी द्वारा दिया यह मंत्र अतिप्रभावी है। जिसने भी इसकी साधना किया उसका उद्धार हो गया। इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण विभीषण है। जो इस मंत्र की साधना से लंकापति हो गए।

तुम्हरो मंत्र विभीषण माना, लंकेश्वर भये सब जग जाना।

हनुमान जी की शिक्षा :

हनुमान जी एक ऐसे गुरु हैं जो प्रवचनों से नहीं बल्कि अपने आचरण एवं व्यवहार से हमें शिक्षा देते हैं। हनुमानजी का सम्पूर्ण जीवन चरित्र एक विद्यालय की तरह है। जिससे हर कोई जीवन का पाठ सरल रूप से सीख सकता है। हनुमान जी की विशेषता यह है कि उनकी कथनी एवं करनी में कोई अंतर नहीं है। वे अपने आचरण में प्रयोग करके स्वयं के अनुभव से शिक्षा देते हैं। कर्म, ज्ञान एवं भक्ति की प्रायोगिक शिक्षा के साथ - साथ व्यक्ति की पहचान, लोक व्यवहार, निरभिमानी, उपयोगी, सर्वप्रिय, सर्व कल्याणकारी एवं अजातशत्रु बने रहने की शिक्षा भी हनुमानजी अपने अनुभव से देते हैं।

गुरु के रूप में हनुमान जी की महिमा :

गुरु की एक विशिष्ट महिमा है। वे अपने शिष्य के उत्थान में स्वयं का उत्थान समझते हैं। इस दृष्टि से हनुमानजी सृष्टि के श्रेष्ठ एवं परोपकारी गुरु हैं। हनुमानजी एक ऐसे गुरु हैं जो स्वयं परोपकार करते हैं तथा अपने व्यवहार से सबको परोपकार की शिक्षा देते हैं। वे सबके उत्थान में सहायक बनते हैं और बदले में किसी से कभी कुछ नहीं लेते। हनुमानजी से ही उपकार प्राप्त करके सुग्रीव को मान - सम्मान के साथ किष्किंधा का राज्य मिल गया।

"तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा, राम मिलाय राज पद दीन्हा।"

इसीलिए तुलसीदास जी हनुमान जी से प्रार्थना करते हैं तो यही कहते हैं कि हे हनुमानजी! मुझ पर गुरुदेव के समान कृपा करो।

"जै जै जै हनुमान गोसाईं, कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।"

- डॉ आदित्य शुक्ल जी

हनुमान जयन्ती एक हिन्दू पर्व है। यह चैत्र माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन हनुमानजी का जन्म हुआ माना जाता है। हनुमान जी को कलयुग में सबसे प्रभावशाली देवताओं में से एक माना जाता है।

हनुमान जयंती वर्ष में दो बार मनाई जाती है। पहली हिन्दू कैलेंडर के अनुसार चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को अर्थात ग्रेगोरियन कैलेंडर के मुताबिक मार्च या अप्रैल के बीच और दूसरी कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी अर्थात नरक चतुर्दशी को अर्थात सितंबर-अक्टूबर के बीच। इसके अलावा तमिलानाडु और केरल में हनुमान जयंती मार्गशीर्ष माह की अमावस्या को तथा उड़ीसा में वैशाख महीने के पहले दिन मनाई जाती है। **चैत्र पूर्णिमा को मेष लग्न और चित्रा नक्षत्र में प्रातः 6:03 बजे हनुमानजी का जन्म एक गुफा में हुआ था। मतलब चैत्र माह में उनका जन्म हुआ था।**

वाल्मिकी रचित रामायण के अनुसार हनुमानजी का जन्म कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मंगलवार के दिन, स्वाति नक्षत्र और मेष लग्न में हुआ था। एक तिथि को विजय अभिनन्दन महोत्सव के रूप में जबकि दूसरी तिथि को उनके जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है।

हनुमान जी के माता पिता -

महावीर हनुमान को भगवान शिव का 11वां रूद्र अवतार कहा जाता है और वे प्रभु श्री राम के अनन्य भक्त हैं। हनुमान जी ने वानर जाति में जन्म लिया। उनकी माँ का नाम अंजना (अंजनी) और उनके पिता का नाम वानरराज केशरी हैं। इसी कारण वीर हनुमान को आंजनाय और केसरीनंदन आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

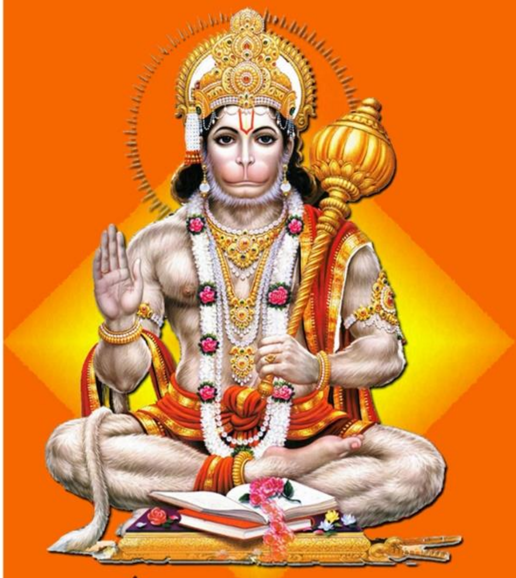

वहीं दूसरी मान्यता के अनुसार हनुमानजी के जन्म के पीछे पवन देव का भी योगदान था। एक बार अयोध्या के राजा दशरथ अपनी पत्नियों के साथ पुत्रेष्टि हवन कर रहे थे। यह हवन पुत्र प्राप्ति के लिए किया जा रहा था। हवन समाप्ति के बाद गुरुदेव ने प्रसाद की खीर तीनों रानियों में थोड़ी थोड़ी बांट दी।

खीर का वह एक भाग एक कौआ अपने साथ उस जगह ले गया जहा माता अंजनी तपस्या कर रही थी। यह सब भगवान शिव और वायु देव के इच्छा अनुसार हो रहा था। तपस्या करती माता अंजनी के हाथ में जब खीर आई तो उन्होंने उसे शिवजी का प्रसाद समझ कर उसे ग्रहण कर लिया। इसी प्रसाद की वजह से हनुमानजी का जन्म हुआ।

हनुमान जी को मिलने वाले 8 वरदान -

वाल्मीकि रामायण के अनुसार, बचपन में एकबार जब हनुमानजी सूर्य देव को फल समझकर खाने के लिए चल पड़े तब घबराकर देवराज इंद्र ने हनुमानजी पर वज्र का वार किया। वज्र के प्रहार से हनुमानजी बेहोश हो गए। यह देखकर वायुदेव बहुत क्रोधित हुए और उन्होंने समस्त संसार में वायु का प्रवाह रोक दिया। संसार में हाहाकार मच गया। तब परमपिता ब्रह्मा हनुमानजी को होश में लाए। उस समय सभी देवताओं ने हनुमानजी को वरदान दिए। इन वरदानों से ही हनुमानजी परम शक्तिशाली बन गए।

1. भगवान सूर्य ने हनुमानजी को अपने तेज का सौवां भाग देते हुए कहा कि जब इसमें शास्त्र अध्ययन करने की शक्ति आ जाएगी, तब मैं ही इसे शास्त्रों का ज्ञान दूंगा, जिससे यह अच्छा वक्ता होगा और शास्त्रज्ञान में इसकी समानता करने वाला कोई नहीं होगा।

2. धर्मराज यम ने हनुमानजी को वरदान दिया कि यह मेरे दण्ड से अवध्य और निरोग होगा।

3. कुबेर ने वरदान दिया कि इस बालक को युद्ध में कभी विषाद नहीं होगा तथा मेरी गदा संग्राम में भी इसका वध न कर सकेगी।

4. भगवान शंकर ने यह वरदान दिया कि यह मेरे और मेरे शस्त्रों द्वारा भी अवध्य रहेगा।

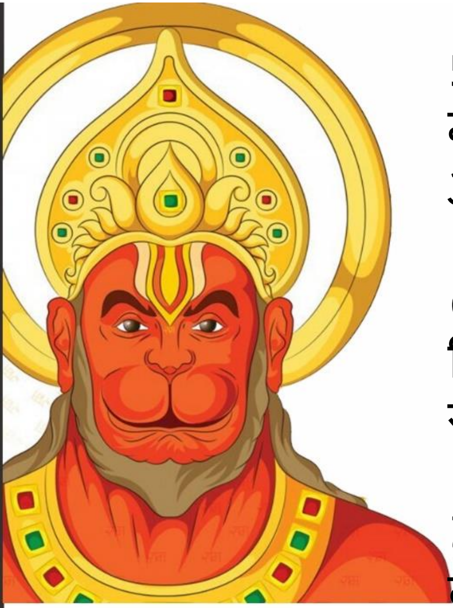

5. देव शिल्पी विश्वकर्मा ने वरदान दिया कि मेरे बनाए हुए जितने भी शस्त्र हैं, उनसे यह अवध्य रहेगा और चिंरजीवी होगा।

6. देवराज इंद्र ने हनुमानजी को यह वरदान दिया कि यह बालक आज से मेरे वज्र द्वारा भी अवध्य रहेगा।

7. जलदेवता वरुण ने यह वरदान दिया कि दस लाख वर्ष की आयु हो जाने पर भी मेरे पाश और जल से इस बालक की मृत्यु नहीं होगी।

8. परमपिता ब्रह्मा ने हनुमानजी को वरदान दिया कि यह बालक दीर्घायु, महात्मा और सभी प्रकार के ब्रह्दण्डों से अवध्य होगा। युद्ध में कोई भी इसे जीत नहीं पाएगा। यह इच्छा अनुसार रूप धारण कर सकेगा, जहां चाहेगा जा सकेगा। इसकी गति इसकी इच्छा के अनुसार तीव्र या मंद हो जाएगी।

पूजा विधि -

- हनुमान जयंती पर व्रत रखने वालों को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

- इस दिन सुबह ब्रह्म मुहूर्त में उठकर सर्वप्रथम भगवान श्रीराम, माता सीता व हनुमानजी का स्मरण करें।

- इसके बाद नहाकर हनुमानजी की मूर्ति स्थापित करें और विधिपूर्वक पूजा करें।

- हनुमानजी को शुद्ध जल से स्नान करवाएं। फिर सिंदूर और चांदी का वर्क चढ़ाएं।

- हनुमानजी को अबीर, गुलाल, चंदन और चावल चढ़ाएं।

- इसके बाद सुगंधित फूल और फूलों की माला चढ़ाएं, एवं नारियल चढ़ाएं।

- फिर केवड़ा या अन्य सुगंधित इत्र लगाएं।

- इन सब के बाद हनुमानजी की मूर्ति के वक्ष स्थल यानी हृदय वाले स्थान पर चंदन से श्रीराम लिखें।

- इस तरह श्रद्धापूर्वक जो भी चढ़ाना चाहते हैं वो हनुमानजी को चढ़ाएं।

- इसके बाद हनुमान चालीसा या सुंदरकांड का पाठ करें, नहीं कर पाएं तो श्रीराम नाम का ही जप करें।

- आखिरी में हनुमान जी को नैवेद्य लगाकर आरती करें और प्रसाद बांट दें।

हनुमान चालीसा की रचना -

मान्यता है कि हनुमान चालीसा के रचयिता तुलसीदास जी हैं। उन्होंने ही रामचरित मानस भी लिखा था।

एक बार बादशाह अकबर ने तुलसीदास जी को दरबार में बुलाया और उनसे कहा कि मुझे भगवान श्रीराम से मिलवाओ तब तुलसीदास जी ने कहा कि भगवान श्री राम सिर्फ भक्तों को ही दर्शन देते हैं। यह सुनते ही अकबर ने तुलसीदास जी को कारागार डलवा दिया। किंवदंती के अनुसार, कारावास में ही तुलसीदास जी ने अवधी भाषा में हनुमान चालीसा लिखी। उसी दौरान फतेहपुर सीकरी के कारागार के आसपास ढ़ेर सारे बंदर आ गए। उन्होंने बड़ा नुकसान किया। तब मंत्रियों की सलाह मानकर बादशाह अकबर ने तुलसीदास जी को कारागार से मुक्त कर दिया।

इस चालीसा में चालीस चौपाइयों में ये वर्णन है, इसीलिए इसे चालीसा कहा गया। इसमें 40 छंद भी हैं। कहा जाता है कि जब पहली बार तुलसीदास जी ने इसका वाचन किया तो हनुमान जी ने खुद इसे सुना।

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।

जय श्री राम || जय श्री हनुमान ||

- रजनी थानवी जी

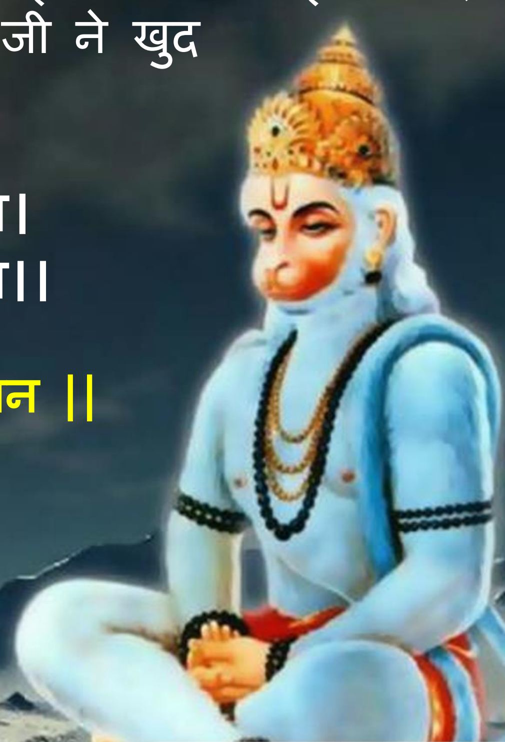

हार्दिक
आभार
भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
के पुराने सभीअंकों को
देखने के लिए
आइकन पर स्पर्श करें
www.bhartiyaparampara.com